Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

M.G.P.-4

गांधी का राजनीतिक चिंतन

(Gandhi's Political Thought)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Vaishali Gupta*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

गांधी का राजनीतिक चिंतन

(Gandhi's Political Thought)

Question Paper—June-2024 (Solved) 1
Question Paper—December-2023 (Solved) 1
Question Paper—June-2023 (Solved) 1-2
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1
Question Paper—December-2019 (Solved) 1-3
Question Paper—June-2019 (Solved) 1-2
Question Paper—December-2018 (Solved) 1
Question Paper—June-2018 (Solved) 1
Question Paper—December-2017 (Solved) 1-2
Question Paper—June-2017 (Solved) 1-2

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. गांधीवादी राजनीतिक विचारों का परिचय 1
(Introduction to Gandhian Political Thought)

2. राज्य और नागरिकता पर गांधी के विचार (रामराज्य) 9
[Gandhi's Views on State and Citizenship (Ramrajya)]

3. लोकतन्त्र पर गांधी के विचार (ग्राम स्वराज) 21
[Gandhi's Views on Democracy (Gram Swaraj)]

4. गांधी की राष्ट्रवाद की अवधारणा 33
(Gandhi's Concept of Nationalism)

5. अधिकार और कर्त्तव्य 39
(Rights and Duties)

6. साधन और साध्य 47
(Means and Ends)

7. स्वतंत्रता और समानता 53
(Liberty and Equality)

8. शक्ति और प्राधिकार 60
(Power and Authority)

9. उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद पर गांधीजी के विचार 67
(Gandhi's Views on Colonialism and Imperialism)

10. उदारवाद और संविधानवाद पर गांधी के विचार 73
(Gandhi's Views on Liberalism and Constitutionalism)

11. फासीवाद (Fascism) 80

12. समाजवाद और साम्यवाद पर गांधीजी के विचार 87
(Gandhi's Views on Socialism and Communism)

13. संरचनात्मक हिंसा पर गांधीजी के विचार 95
(Gandhi's Views on Structural Violence)

14. संघर्ष समाधान के साधन के रूप में सत्याग्रह 102
(Satyagraha as a Means of Conflict Resolution)

15. शांतिवाद पर गांधीजी के विचार 110
(Gandhi on Pacifism)

16. विश्व व्यवस्था (World Order) 117

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

गांधी का राजनीतिक चिंतन

(Gandhi's Political Thought)

M.G.P.-4

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *प्रत्येक खण्ड में से कम-से-कम दो प्रश्न चुनते हुए कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

खण्ड-I

प्रश्न 1. गांधी पर प्रमुख बौद्धिक प्रभाव क्या हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-4, प्रश्न 1

प्रश्न 2. गांधी की राज्य और स्वराज की धारणाओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-12, प्रश्न 1

प्रश्न 3. गांधी व्यक्ति को सत्याग्रह से कैसे जोड़ते हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-40, 'व्यक्ति और सत्याग्रह'

प्रश्न 4. गांधी ने आर्थिक समानता को अहिंसा और स्वतंत्रता के आधार के रूप में क्यों देखा?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-55, 'आर्थिक समानता'

प्रश्न 5. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) गांधी की यंत्रसमूह की आलोचना

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-23, 'मशीनीकरण के आलोचक'

(ख) एक अराजकतावादी समाज में अधिकार

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-62, 'अराजकतावादी समाज में प्राधिकार'

खण्ड-II

प्रश्न 6. उदारवाद पर गांधी के विचारों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-76, प्रश्न 1

प्रश्न 7. फासीवाद पर गांधी के विचारों का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-11, पृष्ठ-80, 'फासीवाद पर गांधी के विचार'

प्रश्न 8. सत्याग्रह की गांधीवादी तकनीकों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-14, पृष्ठ-104, 'सत्याग्रह की तकनीकें'

प्रश्न 9. गांधी के संघर्ष समाधान के सिद्धांत की रूपरेखा क्या है?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-14, पृष्ठ-106, प्रश्न 1

प्रश्न 10. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) संविधानवाद

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-75, 'संविधानवाद'

(ख) युद्ध : अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की अनसुलझी समस्या

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-16, पृष्ठ-118, 'युद्ध : अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की अनसुलझी समस्या'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

गांधी का राजनीतिक चिंतन

(Gandhi's Political Thought)

M.G.P.-4

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *प्रत्येक खण्ड में से कम-से-कम दो प्रश्न चुनते हुए कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

खण्ड - I

प्रश्न 1. गांधी द्वारा ब्रिटिश संस्थानों की प्रशंसा के कारणों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-5, प्रश्न 3 तथा अध्याय-4, पृष्ठ-37, प्रश्न 3

प्रश्न 2. सामाजिक प्रगति और परिवर्तन के गांधी के विचार में रचनात्मक कार्यक्रमों की क्या भूमिका है?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-10, 'रचनात्मक कार्यक्रम' तथा पृष्ठ-14, प्रश्न 3

प्रश्न 3. अभिजात वर्ग और जनता के बीच खाई को पाटने में स्वशासन की भूमिका की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-35, 'स्वशासन : अभिजात्य वर्ग और समान्य जन के बीच की खाई को पाटने की आवश्यकता'

प्रश्न 4. गांधी ने अहिंसा को स्वराज की प्राप्ति के आधार के रूप में कैसे माना?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-48, 'स्वराज की प्राप्त के लिए साधन के रूप में अहिंसा'

प्रश्न 5. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(अ) गांधी द्वारा औद्योगीकरण की आलोचना

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-26, प्रश्न 3

(ब) शक्ति की अवधारणा

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-63, प्रश्न 2

खण्ड - II

प्रश्न 6. उपनिवेशवाद के खिलाफ गांधी के अहिंसक संघर्ष का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-70, प्रश्न 3

प्रश्न 7. संरचनात्मक हिंसा को रोने के लिए गांधी के नुस्खे क्या थे?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-13, पृष्ठ-97, 'संरचनात्मक हिंसा की रोकथाम'

प्रश्न 8. सत्याग्रह पर गांधी के विचारों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-14, पृष्ठ-103, 'गांधीजी और सत्याग्रह'

प्रश्न 9. क्या आप इस विचार से सहमत हैं कि गांधी एक योग्य शांतिवादी थे?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-15, पृष्ठ-111, 'गांधीजी परिपक्व शांतिवादी के रूप में', 'गांधीजी संपूर्ण शांतिवादी के रूप में'

प्रश्न 10. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(अ) सामाजिक परिवर्तन

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-88, 'सामाजिक परिवर्तन'

(ब) शांतिपूर्ण विश्व व्यवस्था के लिए पूर्वापेक्षाएँ

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-16, पृष्ठ-120, प्रश्न 2

■■

NEERAJ PUBLICATIONS

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

गांधी के राजनीतिक विचार
(Gandhi's Views on Politics)

गाँधीवादी राजनीतिक विचारों का परिचय
(Introduction to Gandhian Political Thought)

1

परिचय

गाँधीजी को 20वीं सदी के सिद्धान्त संस्थापक एवं कर्मयोगी के रूप में जाना जाता है। वे एक सिद्धान्त रचियता ही नहीं, वरन एक कार्यकर्त्ता और वास्तविक दार्शनिक भी थे। सार्वजनिक जीवन में चिंतन करने के कारण उनके लेखन में निरन्तरता का अभाव रहा। गाँधीजी ने अपने जीवनकाल में तीन संपूर्ण ग्रन्थों की रचना की *आटोबायोग्राफी, सत्याग्रह इन साउथ अफ्रीका* और *हिंद स्वराज* (1909)। उनके *हिंद स्वराज* को राजनीतिक सिद्धान्त का एक स्तम्भ माना जाता है। हालाँकि गाँधीजी पाश्चात्य चिंतन से काफी प्रभावित थे, किन्तु कभी भी पाश्चात्य संस्कृति को अपनाने के वे पक्ष में नहीं थे। वे भारतीय संस्कृति को सर्वश्रेष्ठ मानते थे। वे पश्चिमी सभ्यता के गुणों को भारतीय संस्कृति में अपनाकर कुछ सुधार अवश्य करना चाहते थे। गाँधीजी के कई विचारों को पश्चिम में भी; विशेषत: शांतिधारकों, पर्यावरणविदों और महिलावादियों द्वारा अपनाया गया। वर्तमान समाज के लिए उनकी दी गई शिक्षाएं बहुत महत्त्वपूर्ण और अद्वितीय हैं।

अध्याय का विहंगावलोकन

आधुनिक भारतीय विचारों की स्वायत्तता

प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन की परंपरा वैदिक युग से चली आ रही है। इस शृंखला में बाद में उपनिषद, धर्मशास्त्र, बौद्ध साहित्य, मनुस्मृति, महाभारत के शांति पर्व तथा अर्थशास्त्र चिन्तन के साथ-साथ आठवीं सदी में इसमें इस्लामिक चिंतन भी जुड़ गया। भारतीय समाज पर पाश्चात्य सभ्यता की जकड़ के उपरान्त भी स्वदेशी संस्कृति को जीवंत बनाए रखा गया। इसी कारण से आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त अपनी अलग स्वायत्तता को बचाए रख सका। पहले भारतीय आधुनिक राजनीतिक चिंतक राजा राममोहन राय थे, जिनके काल में भारत पाश्चात्य विचारों पर संस्थाओं के संपर्क में आया। वास्तव में राजा राममोहन राय बिल डूरंट के पूर्व उद्घोषक थे, जो सभ्यताओं के विकास और उत्थान को एक सहयोगी कार्यक्रम मानते थे। गाँधीजी का स्थान इसमें अधिक महत्त्वपूर्ण रहा, क्योंकि उन्होंने आधुनिक औद्योगिक संस्कृति की समस्याओं को उजागर करके परंपराओं के नवीनीकरण की बात कही थी। गांधीजी से पहले के विचारकों को भी इस सफलता का श्रेय दिया जाना चाहिए था, किंतु गाँधीजी और इनसे पूर्व के विचारकों में प्रमुख अंतर यह था कि गाँधीजी में उन विचारों की आलोचनाओं के साथ-साथ परिवर्तन करने की क्षमता थी। उनका आशय था कि पूर्व के विचारकों के चिंतन का मूल्यांकन तथा सुधार करना व हिन्दू समाज के आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को भी बिल्कुल बदलकर रख देना। इस संदर्भ में दो प्रमुख घटनाएं हैं। इस गाँधीवादी युग में भी भारतीय आधुनिक चिंतन गाँधीवादी बनाम मार्क्सवादी, गांधीवादी बनाम राष्ट्रीय क्रांतिकारियों तथा गाँधीवादी बनाम टैगोर से प्रभावित रहा।

गाँधीजी पर बौद्धिक प्रभाव

गाँधीजी के जीवन पर पाश्चात्य विचारकों; जैसे रस्किन थ्योरेयु और टॉलस्टाय का प्रभाव रहा है। संगठनात्मक दृष्टि से भी उन पर पाश्चात्य प्रभाव रहा है। उनकी शाकाहारी व्यक्तिगत सोच का उल्लेख भी कई पाश्चात्य समूहों के चिंतन में देखा गया है। रस्किन की पुस्तक *अन टू दी लास्ट* ने उनके जीवन को बदल डाला, यह स्वयं गाँधीजी ने स्वीकार किया है। उन्होंने इस पुस्तक का सार निम्नलिखित तीन प्रमुख सिद्धान्तों के रूप में दिया है

1. एक व्यक्ति का हित सभी व्यक्तियों के हित में निहित होता है।
2. एक वकील का कार्य भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है, जितना एक नाई का, क्योंकि दोनों ही अपने-अपने कार्यों से जीविका अर्जित करते हैं।

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

3. एक श्रमिक का जीवन अर्थात मिट्टी खोदने वाला या शिल्पी का जीवन भी सम्मान योग्य है।

गाँधीजी रस्किन की भाँति औजारों और पूँजी को उन्हीं हाथों में सौंपना चाहते थे, जो उनका प्रयोग कर सकें। रस्किन के इसी सिद्धान्त *ब्रेड लेबर* अर्थात श्रम से प्रेरित होकर गाँधीजी ने श्रमिकों के कल्याण के लिए कार्य करना आरम्भ किया। गाँधीजी ने इन विचारों का प्रयोग अहमदाबाद में मिल की हड़ताल के दौरान किया। (इरिक्सन 1969)। इसी के आधार पर गाँधीजी ने न्यूनतम जीवनयापन वेतन तथा आवश्यकतानुसार एक-दूसरे के साथ अंतर को निर्धारित किया। गाँधीजी के आर्थिक विचारों के प्रमुख स्रोत रस्किन थे। उनके विचारों से प्रभावित होने के पश्चात उन्होंने धन व व्यावसायिक विकास को छोड़कर स्वयं को बुनकर और किसान कहलवाना पसंद किया। इन आदर्शों को उन्होंने तथा उनके शिष्यों ने भी अपनाया। गाँधीजी की सत्याग्रह की अवधारणा के पीछे टॉलस्टॉय के प्रेम में विश्वास और *सरमुन ऑन दी माऊंट* के सिद्धांतों, बाईबिल और *न्यू टैस्टामेंट तथा थ्योरो* के सविनय अवज्ञा के सिद्धांत ही थे। गाँधी मार्क्सवाद के नियतिपरक समाज और इतिहास के विवरण वर्ग-संघर्ष परमात्मा के प्रति अनिष्ठा और परिवर्तन के क्रांतिकारी स्वरूप के विरुद्ध थे, किन्तु वे मार्क्सवादियों और समाजवादियों की भाँति समता, न्याय और शोषणरहित समाज के पक्षधर थे। गांधीजी के विचार उदारवादियों से भिन्न थे। उन्होंने ग्रीन की भाँति मानव के सामाजिक पक्ष पर बल देते हुए उसे वास्तविक रूप में सामाजिक प्राणी माना। गाँधीजी को एक अराजकतावादी क्रांतिकारी माना जाता था, क्योंकि वे रूसो की भाँति एक संपूर्ण समाज की कल्पना करते थे, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में कानून हो, सबके साथ सहयोग तथा प्रेम से रहता हो, स्वयं पर नियंत्रण रखता हो तथा अपने श्रम से जीवन-निर्वाह करता हो। गाँधीजी एक ऐसे समाज के पक्ष में थे, जहाँ राज्य का हस्तक्षेप न्यूनतम हो।

पश्चिम के आलोचक

गाँधीजी के जीवन पर पाश्चात्य जगत का प्रभाव होने के बावजूद भी वे उसके पक्ष में नहीं थे। उन्होंने पाश्चात्य भौतिकवाद तथा आधुनिक तकनीकों की सदैव बुराई की। गाँधीजी आधुनिक समाज में तकनीकों और औद्योगिकीकरण की उत्पत्ति को मानव समाज के दुखों का मुख्य कारण मानते थे। गाँधीजी के इन विचारों का कारण दक्षिणी अफ्रीका में हुई औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया थी। पाश्चात्य संस्कृति की निंदा उन्होंने दो कारणों से की पहला, इसका आधार घोर असमानता पर टिका हुआ है। दूसरा, यह व्यक्ति को गैर-व्यक्तिपरक बना देता है। रूसो की भाँति उनका भी यह मानना था कि आधुनिक तकनीक और औद्योगिकीकरण दुखों और असमानता का कारण बनते हैं। गाँधी का मानना था कि आजादी के लिए श्रमिक वर्ग और जन-साधारण में स्वतंत्रता का होना जरूरी है। वे पाश्चात्य तकनीक और जीवन-शैली को भारतीय परंपराओं लिए अनुपयुक्त मानते थे। गाँधीजी की कल्पना में एक ऐसा आजाद भारत था, जो पश्चिमी संस्कृति का अनुकरण न करे। अर्थात विदेशी तकनीकी को न अपनाते हुए स्वदेशी साधनों को अपनाना। गाँधीजी ने जापान के आधुनिकीकरण का उदाहरण तो मान लिया, किन्तु उनका अनुसरण करने का निषेध ही किया।

भारत में भारी संख्या में श्रमिकों की उपलब्धता तथा भारी मात्रा में बेरोजगारी होने के कारण गाँधीजी का मानना था कि यहाँ मशीनीकरण पर प्रतिबंध होना जरूरी है। वे ऐसे औद्योगिकीकरण के पक्ष में थे जिसमें भोजन, घर, स्वास्थ्य और आधारभूत शिक्षा की जरूरतों की पूर्ति हो सके। गाँधीजी न केवल पाश्चात्य राजनीतिक और आर्थिक वर्चस्व के विरोधी थे, बल्कि वे पाश्चात्य राजनीतिक व्यवस्था और तकनीकी के भी विरोधी थे, क्योंकि इसने एशिया और अफ्रीका की प्राचीन सभ्यता के मूल आधारों विशेषकर धार्मिक तत्त्वों को भी बदल दिया था। (वुडकॉक 1970)

फेनन ने अपनी पुस्तक *दी रेचस्ड ऑफ दी अर्थ* (1961) में उपनिवेशवाद की समाप्ति की बात की है, किन्तु वे साम्राज्यवादियों के विरुद्ध कुछ नहीं कहते। वह यूरोपीय को युद्ध के अपराधियों का नाम देते हैं, किन्तु इसके बावजूद भी वे तीसरी दुनिया में परिवर्तन के लिए यूरोप के द्वारा स्वदेशी तरीकों की अपेक्षा सहायता को जरूरी मानते थे। दूसरी ओर गाँधीजी स्वेदशी पर जोर देते हैं। उनका मानना है कि स्वदेशी समस्याओं का हल भारतीय संस्कृति में है, पाश्चात्य सभ्यता में नहीं। गाँधीजी की सोच में स्वेदशी के साथ-साथ पाश्चात्य सभ्यताओं की अच्छी परंपराओं को अपनाना भी शामिल है, जो उन्हें एक अलग पहचान देती है। उन्होंने भारतीयों को अपनी पुरानी परंपराओं और रूढ़िवादिता को सुधारने की बात की तथा सामाजिक न्याय और समानता पर आधारित व्यवस्था के महत्त्व पर जोर दिया।

स्वदेशी स्त्रोतों के खोजी के रूप में गाँधी

गाँधीजी की अवधारणा पाश्चात्य, मार्क्सवादी, समाजवादियों तथा उदारवादियों से कुछ भिन्न थी तथा उनमें कुछ समानता भी देखने को मिली। उनमें एक क्रांतिकारी स्वभाव शामिल था। वे वास्तविक रूप में समसामयिक समस्याओं से संबद्ध थे तथा उनके संभव और वांछित हल निकालना चाहते थे। गाँधीजी ने अपनी वर्गीकरण की छवि को तोड़ा है। पहला, उन्होंने ऐसे साधनों का प्रयोग किया, जिसमें जनता ने अपनी आत्मा को जाग्रत करके

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

स्व-क्रांति की, अत: उनका शोषण अब नहीं किया जा सकता। दूसरा, वे मानवता को एक परिवार मानते थे, इसलिए गाँधी बुर्जुआ राष्ट्रवाद के आरोपों से परे चले गए। (बोस, 1947) राममोहन राय से लेकर विवेकानंद तक ने हमेशा पाश्चात्य विचारों और संस्कृति को पूर्व से मिलाने की कोशिश की है। गाँधीजी ने पाश्चात्य अवधारणाओं तथा आदर्शों का प्रयोग करके भारतीय प्रणाली की कमियों को दिखाया है। किन्तु उसी के आधार पर विशुद्ध भारतीय व्यवस्था को बनाया भी है। उन्होंने इस बात को नकारा है कि हिंदूवाद मूलत: भ्रष्ट और नकारात्मक है, बल्कि इसकी स्वायत्तता और कर्म व महत्त्वपूर्ण परंपराओं को प्रकाशित करने का प्रयास किया है। गाँधीजी ने भारतीय व्यवस्था में काफी बदलाव किये। भारतीय व्यवस्था में भेदभाव के कारणों का अध्ययन करने पश्चात उन्होंने दो निष्कर्ष निकले *(i)* साम्राज्यवादी शोषण और *(ii)* पाश्चात्य पूँजीवादी औद्योगिक सभ्यता की सीमाएँ। गाँधीजी एक ऐसे भारत का सपना देखते थे, जहाँ अमीर-गरीब में अंतर न हो, जहाँ गरीब से गरीब इसे अपना देश समझे और जिसके निर्माण में उसकी भी प्रभावी भूमिका हो, जिसमें सभी समुदाय पूर्ण सहयोग से जीवनयापन कर सकें।

ब्रिटिश संस्थाओं के प्रशंसक के रूप में गाँधी

गाँधीजी की सत्याग्रह की तकनीक इस बात पर आधारित थी कि संकटों से छुटकारा पाने के लिए व्यक्ति को सामने वाले को दु:ख देने के बजाय स्वयं कष्ट उठाने के लिए तैयार रहना चाहिए और गाँधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में भी यही तकनीक अपनाई थी। लंबे समय तक ब्रिटिश महिलाओं ने अपने वोट देने के अधिकार लिये संघर्ष किया और अंत में ब्रिटिश शासन को झुकना पड़ा। गाँधीजी ने कहा था कि "यदि आप अंग्रेजों को झुकाना चाहते हैं, तो उनके सामने डटकर खड़े हो जाएं तथा वे शारीरिक बल की अपेक्षा स्वयं नैतिक बल से डरेंगे। यदि आप उन्हें गलत साबित कर देंगे, तो वे अपनी गलती पर विचार कर उसे अवश्य ठीक करेंगे।'' इससे सिद्ध होता है कि सत्याग्रह की तकनीक को युद्ध का विकल्प माना जा सकता है। गाँधीजी ने सन 1904 में लिखा था कि सफलता के लिए ईमानदारी जरूरी है। अंग्रेज ईमानदारी व एकता को समझते तथा मानते हैं। गाँधीजी हमेशा दक्षिणी अफ्रीका में हुए आंदोलनों के बारे में बात करते थे। उन्होंने वहाँ से दो सीख ली थी, जिनका प्रयोग उन्होंने भारत में भी किया (1) जाति, धर्म व सम्प्रदाय के मतभेद को भुलाकर, एकजुट होकर संघर्ष करना, और (2) खुले अहिंसात्मक आंदोलन का क्या महत्त्व होता है, यह समझना।

गाँधीजी के मन में ब्रिटिश लोगों के प्रति प्रेमभाव व न्याय में आस्था उनके भारत लौटने के बाद भी थी। उनके इसी भाव के कारण उन्होंने प्रथम विश्व युद्ध के दौरान बिना किसी शर्त के अंग्रेजों के लिए सैनिक भर्ती करने की बात मान ली, किन्तु मोहम्मद अली जिन्ना तथा बाल गंगाधर तिलक ने राष्ट्रीयता की शर्त को ध्यान में रखते हुए ऐसा करने से इन्कार कर दिया। गाँधीजी का ब्रिटिश लोगों के प्रति जो विश्वास था, वह जलियांवाला बाग हत्याकांड के बाद चूर-चूर हो गया था। उनका ब्रिटिशों की न्यायप्रियता में विश्वास तो नहीं था, किन्तु अंग्रेजी संसदीय संस्था की संभावनाओं के प्रति उनके विश्वास में कोई कमी नहीं आई थी।

ओवरवेल का मानना था की गाँधीजी का संघर्ष ब्रिटिश शासन के विरुद्ध चलता रहा। वे यह भी नहीं चाहते थे कि गाँधीजी आधुनिक तनाशाही से परिचित हो जाएं, इसलिए उन्होंने इसे चलने दिया। वुडकॉक ने गाँधीजी के विषय में कहा कि गाँधीजी ने ब्रिटिशों को भली-भांति जांचा-परखा था और उनके विनम्र स्वभाव व उचित उपायों के द्वारा ही उनकी चेतना को जगाया गया और उनके इसी स्वभाव ने उन्हें भारत के लिए एक विशिष्ट व्यक्ति बना दिया।

निष्कर्ष

गाँधीजी ने अपने जीवनकाल में ब्रिटिश शासन को यह साबित करके दिखा दिया था कि साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद नैतिक रूप से सही नहीं हैं, लेकिन उनके विरोधी इसकी प्रशंसा करने के बजाय उनके जीवनकाल या बाद के वर्षों में घटी घटनाओं की कमियों को गिनवाते हैं। गाँधीजी का मानना था कि सार्वजनिक हित की प्राप्ति ही व्यक्ति का नैतिक उत्तरदायित्व है, राजनीतिक सत्ता प्राप्त करना नहीं। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का संगठन 1920 में हुआ, जिसका उन्होंने तीन दशकों तक संचालन किया, जो उनकी संगठन चलाने की क्षमता को प्रदर्शित करता है। गाँधीजी ने यह सिद्ध कर दिया कि भारतीय भी ब्रिटिश की भाँति एकीकृत प्रशासनिक ढाँचे की स्थापना कर सकते हैं। उन्होंने ऐसी लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना की, जिसमें कोई एक व्यक्ति तानाशाह या अति विशिष्ट नहीं हो सकता। गाँधीजी के विषय में जॉर्ज ओवरवेल ने लिखा है कि "गाँधीजी का पूरा जीवन एक तीर्थयात्रा के समान रहा है, जिसका प्रत्येक भाग महत्त्वपूर्ण है तथा उन्होंने अपने जीवन से सारी दुनिया को समृद्ध किया।"

ओवरवेल का मानना था कि ब्रिटिश लोग गाँधीजी को पसंद करते थे, क्योंकि उनमें भ्रष्टाचार, बुरी इच्छाएं तथा कार्यों में द्वेषभाव जैसी बुरी आदतें नहीं थी। गाँधीजी मानते थे कि सभी

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

व्यक्ति अच्छे हैं तथा प्रत्येक व्यक्ति जहां तक संभव है, किसी भी दूसरे व्यक्ति से संपर्क स्थापित कर सकता है। उन्होंने सत्याग्रह का मार्ग अपनाया, जो दुश्मन को नुकसान पहुँचाये बिना स्वयं जीतने की पद्धति थी। उनके विचारों को पश्चिम में भी अपनाया गया। मार्टिन लूथर किंग, जूनियर बनॉर्ड रसैल, कोराजानो एक्विनो पेट्राकेली तथा वाकलाव हेवल ने उनके अहिंसावाद तथा सविनय अवज्ञा को अपनाया। गाँधीजी ने पश्चिम की खूबियों को स्वेदश में अपनाया तथा उसे स्वदेशी परम्परा में मिश्रित करके गाँधी उन वर्तमान विचारकों में अग्रणी हो गए, जो आज सांस्कृतिक बाहुल्यता के सम्मान के साथ सार्वभौमिकता की बात कहते हैं।

बोध-प्रश्न

प्रश्न 1. गाँधी पर पड़े प्रमुख बौद्धिक प्रभावों का वर्णन कीजिए।

उत्तर महात्मा गाँधी ने भारत के स्वतंत्रता-संग्राम को जनता का संघर्ष बनाकर समूचे देश में जागृति एवं क्रांति की लहर पैदा कर दी। वे 20वीं सदी के एक प्रमुख कर्मयोगी थे, जिनका मुख्य ध्येय स्वराज प्राप्ति था। वे एक ऐसे आदर्श समाज की कल्पना करते थे, जो शोषणरहित हो, जिसमें सबको समान अधिकार हो। उनके जीवन पर पाश्चात्य विचारकों; जैसे मिल, रस्किन, थ्योरयू तथा टॉलस्टॉय का पर्याप्त प्रभाव रहा। उनके जीवन पर सुकरात की भी छाप रही है। गाँधी पर रस्किन की पुस्तक *अप टू दी लास्ट* का भी काफी प्रभाव पड़ा, जिसने उनके जीवन को पूर्णत: बदल कर रख दिया। इस पुस्तक का सार उन्होंने तीन सिद्धांतों में दिया, जो इस प्रकार हैं

(1) एक व्यक्ति का हित सभी व्यक्तियों के हित में निहित है।

(2) एक श्रमिक का जीवन, अर्थात मिट्टी खोदने वाला अथवा शिल्पी भी सम्माननीय जीवन जीने योग्य है।

(3) एक वकील का कार्य भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है, जितना एक नाई का, क्योंकि दोनों ही अपने-अपने कार्यों से जीविका उपार्जन करते है।

गाँधीजी ने रस्किन के विचारों से शिक्षा ली कि असमान सामाजिक व्यवस्था ही पर्याप्त सीमा तक हिंसा के कारणों को पैदा करती है। रस्किन की भाँति गाँधीजी भी यह मानते थे कि औजार व पूँजी उन्हीं हाथों में होनी चाहिए, जो इनका प्रयोग कर सकें। रस्किन के इसी प्रकार के विचारों से प्रभावित होकर गाँधीजी ने श्रमिकों के कल्याण के लिए कार्य करना आरंभ किया। गाँधीजी ने इन विचारों का प्रयोग अहमदाबाद में मिल की हड़ताल के दौरान किया। इसी के आधार पर गाँधीजी ने न्यूनतम जीवनयापन वेतन तथा आवश्यकतानुसार एक-दूसरे के साथ अंतर का निर्धारण किया। रस्किन गाँधीजी के आर्थिक विचारों के समर्थक थे ही, उन्होंने गाँधीजी के संपूर्ण व्यक्तित्व को ही बदल दिया।

रस्किन के विचारों के प्रभाव के परिणामस्वरूप गाँधीजी ने धन और व्यावसायिक उन्नति का परित्याग करके अपनी जीवन-शैली बिल्कुल बदल दी तथा स्वयं को वकील कहलाने की अपेक्षा किसान व बुनकर कहलाना पसंद किया। गाँधीजी की अवधारणा शारीरिक शक्ति के स्थान पर आत्मा की शक्ति पर भी रस्किन के विचारों का प्रभाव था। इन विचारों का प्रभाव गाँधीजी पर ऐसा हुआ कि उन्होंने साधारण जीवन-शैली को अपनाकर स्वयं को गरीब तथा जनसाधारण जनता के साथ आत्मसात कर लिया।

इसके अलावा टालस्टॉय के प्रेम में विश्वास और *सरमन ऑन दी माऊँट* के सिद्धांतों, बाईबिल और *न्यू टैस्टामैंट* तथा थ्योरो के *सविनय अवज्ञा* के सिद्धांतों ने गाँधीजी के सत्याग्रह की अवधारणा को जन्म दिया।

गाँधीजी मार्क्सवाद के नियतीपरक समाज और इतिहास के विवरण, वर्ग-संघर्ष, परमात्मा के प्रति निष्ठा का अभाव और परिवर्तन के क्रातिकारी स्वरूप के विरुद्ध हैं। वे अहिंसात्मक परिवर्तन के पक्षधर थे। उन्होंने (ट्रस्टीशिप) न्यासिता के सिद्धांत को भी सराहा है, जिससे पूँजीपतियों और श्रमिकों के मध्य समन्वय व सौहार्द्र बना रहे। गाँधीजी के विचार उदारवादियों से भिन्न थे, वे व्यक्तिगत अधिकारों पक्ष में तो थे, किन्तु वे अनियंत्रित स्वतंत्रता को गलत मानते थे। गाँधी स्वयं को एक अराजकतावादी क्रांतिकारी बताते हैं, क्योंकि वे भी उन्हीं की तरह एक संपूर्ण सर्वहितकारी समाज की कल्पना करते हैं।

प्रश्न 2. गाँधी ने पश्चिम की आलोचना क्यों की?

उत्तर गाँधीजी ने अपनी शिक्षा इंग्लैण्ड में प्राप्त की थी, अत: उनके जीनव पर बहुत-से पाश्चात्य दार्शनिकों का प्रभाव ही था, किन्तु पाश्चात्य संस्कृति को न वे अपना आदर्श मानते थे और न ही प्रेरणा का स्रोत। उनकी सोच पश्चिम की संस्कृति से बहुत अलग थी। इंग्लैण्ड में इतने वर्ष रहने के बाद भी वे शाकाहारी रहे। उन्होंने वहां का पहनावा जरूर अपनाया था, ताकि लोग उन्हें असभ्य न समझें, लेकिन उनकी संस्कृति के वे विरुद्ध थे। उन्होंने सदैव पाश्चात्य भौतिकवादी तथा आधुनिक तकनीक; जैसे रेलवे, टेलीग्राफ, टेलीफोन, भारी उद्योग धंधों की हमेशा आलोचना की। गाँधीजी ने आधुनिक समाज में तकनीकों और औद्योगिकीकरण को मानवीय दुखों का मूल कारण माना है। पाश्चात्य संस्कृति की आलोचना करने के मुख्यत: दो कारण रहे हैं पहला, इसका आधार घोर असमानता पर टिका हुआ है तथा दूसरा, यह व्यक्ति को गैर-व्यक्तिपरक बना देता है। उनका मानना था कि आधुनिक

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com